रात्री क्लास ओम शान्ती 7-11-1966

कहां बैठे हो?शान्तीधाम,सुखधाम यां दुखधाम में बैठे हो?जैसे कहते है नां लौकिक,पारलौकिक आलोकिकयह सगंम युग भी आलौकिक धाम हैं अर्थात सबसे न्यारा हैं।अब ना तो शान्ती नां ही सुख धाम में हो।यह आ आलौकिक धाम हैं बाबा भी भी आलाकिक हैं।क्युं कि लोकिक और पालौकिक इक्कठे है।ऐसा बाप कब मिलेगा सि सिवाय इस आलौकिक युग केयुग भी आलौकिक हैं।किसीको पता ही नही हैं कि हम कौन हैं।कोई नही समझ सकता कि भारत की शिव शक्ति सेना हैंजो कि श्री मत पर भारत को स्वर्ग बनाये रहीइहैं। पारलौकिक और लौकिक बाप सब जानते हैं।इस आलौकिक बाप को कोई नही जानता।शास्त्रों में भी नही हैं। बापपतित के ही साधारण तन में आते हैं।परन्तु समझते नही है?कहते हैं ब्रहमा को क्यूं बिठाया हैं।अेप्रजा पिता ब्रहमा तो यहां ही है नां।यह तो नामी ग्रामी प्रता पिता ब्रहमा है नां।प्रजापिता ब्रहमा हैं तो ही शिव बाबा भी है।नही तो ब्रहमा कहां सें आये?तो वर्सा तो शिव बाबा सें पाते होना ब्रहमा दवारा।बाप राझूं रमज बाज है।तो उनके बच्चे भी ऐसे ही राझूं रमज बाज है।कैसे बैठ रास्ता बताते हैं।रमज कितनी उत्तम बताते है।भगवान बाबप कहते है मुझे याद करो तो सर्वग कावर्सा मिलेगा।भगवान स्वर्ग की स्थापना करने भीारत मे आते है।जरूर स्वर्ग की रचना रची थइ। हम स्वर्ग में थे फिर 84 जन्मों के बाद पतित बनु हैं।अब फिर परवन बन रहें है।तुम्हारी लाईफ बहुत ऊची है।तुम्हारे ही लिये गायन है गोप गोपियों कों अतिन्द्रय सुख था। देवताओं के लिये नही हकेगें।गोप गोपियों कके लिये कहते हैं।उन्होनें फिर के,के साथ दिखाई है। यह तुम्हारा अमुल्य जीवन हैं।तुम शिव बाा की ईश्वरीय सन्तान हो।आते हो शिव बाबा सें मिलनें ब्रहमा के दवारा।शिव को सर्दव बा कहते हैं।मगर यह कोई को पता ही नही कि शिव बाबप बच्चों को क्या पढाते हैं। वो बाप भी है सिक्षा भी देते है सयगती भी कते है।वो बाप टीचर गुरु है।यह याद आने सें भी नशा चढ जाये।भगवान पढाते हैं।कृष्ण तो बाबा है ही नही।अगर कृष्ण बाबा होता तो अमेरिका सें भी [illegible] आये वर्सा देते हैं सुाव का। 5000साल पहले स्वर्ग का सुख था। उनके यादगार यह चित्र है।अब तो क्रंगाल बन गये है।महाभारत की लडाई के बाद फिर भी स्वर्ग होगा। बहुत सहज समझाये सकते हो।भारत में इनका राज्य था। भारत स्वर्ग था।अब 84वां जन्म होने कारण सीढी उतरते जाते हैं।तुम ही सतोप्रधान सें तमोप्रधान बनते हो।वो लोग यह समझते ही नही हैं।वो कहते हैं एक जन्म मनुष्य का बाकी 84लाख योंनियां और लेनी पडती हैं।इस लिये सीढी बनाई हैं कि मनुष्य कैसे सतोप्रधान सें 84 जन्मे लें कर तमोप्रधान आकर बनें है।यह तो बहुत ही सहज समझने की बाते हैं।गाये खाना खाती है तो चबारती ही रहती हैं तुम भी स्मरण करते रहो तो खुशी का पारा चढे और तुम पावन बन जाओं।हम आत्मा हैं यह भी भूल जाते हैं।यहां भगवान पढाते ह।हम राजाई पद पाने के लिये यहां जाते हैं।यह तो बच्चों को नही भुलना चाहिये नां।यह शरीर पुराना है तो बिमारी आद में कुछ नां कुछ महसुसता होती हैं।आवाज भी निकलती हैं।लेकिन आवाज करते भी बाप की याद रहनी चाहिये। कर्मातीत अवस्थाकोई तो फिर परिक्षा पुरी हुई फिर बीमारी नही रहेंगी।फिर लडाई शुरु ज्ञान बन्द हो जावेगा।अब तुम नई दुनियां के लिये पडते हो। ट्रान्सफर होता है। पुरानी दुनियां को आग जरूर लगनी हैं।वो लोग भी उन्नती करते जाते हैं।आटामिक बाम्ब कोई दिन बिकेगें जरूर।एक दो को मदद करेंगें।नैचरल कैलिमटज भी ऐसी आती हैं जो बात मत पूछो। समुंद्र भी जोर सें उछलते हैं।नुकसान बहुत करते हैं।तुम बच्चे यह याद करो कि हम सब संगम युगी हैं। फिर सतयुग में जावेंगें।बाया शान्तीधाम।घर याद पडे तो बाबा भी याद पडे।बा बा आया हैं घर ले चलने। तो इस बाप को याद करेंगें नां।यह भी मनमनाभव हुआ।बाबा समझते हैं तूफान कडा है।घडी-2 भुलाये देता हैं।यहां वालों को तो जयादा याद रहनी चाहिये।जहां भी प्रर्दशनीयां करते है तो पूछो गीता किसने गाई?गीता झूठी सिध हुईतो सब झूठे।यह लिखावाये लेना चाहिये।विदवान आद कब नही लिखेंगें।लिखें तो

अपनी इज्जत गवायें दें। उनके लिये तो मुसीवत हो जाती हैं। कल्प लाखों वर्षों का हैं यह भी मुसीवतगीता का भगवान कृष्ण हैं यह भी मुसीवत। इन वातों पर विदवान आद समझ नही सकते। और नां ही लिख सकते हैं। वच्चाकं को कितना अतिइन्द्रय सुख रहना चाहिये। अभी तुम सव संग पर हो। नई चीज मिलती हैं तो खुशी होती हैं। ज्ञान रत्न देते हो यह तुम पद्मों का दान देते हो। इनसे मनुष्य 21 जन्म सुख पाते हैं। यह याद करते रहो तो भी वहुत खुशी होगी। गरीव को धन मिलता हैं तो खुशी का पारा चढ जाता हैं। तुमको भी लाठरी मिल रही हैं। जानते हो यह शरीर छोड फिर दूसरे जनम में महल वनावेंगें। मगर यह हैं गुप्त किसीको भी पता नही हैं। झोंपडी में रहना पसंद करते हैं मगर महलों में रह कर अपिवत्र रहना यह पसंद नही करते। शाहुकार कोई घर छोडे और वो वैठ समझावे कि मैं पवित्र वनती हूं यह नही वनता हैं इसलियेग मैंने पतित पावन वाप की शरण ली है। वाप कहते हैं कामविकार पर जीत पाओ काम महा शत्रु है। 63 जन्म गोता खाया है। तो अव हम राजाई का वर्सा पाने क्यु नही पवित्र वनूगी। वडी वात हैं क्या? यह सव शुरुआत में इस नशे में भागी थीनां? समझ कर छोडा था नां? जव साक्षात्कार हुआ कि विनाश होता हैं वाप कहते हैं पवित्र वनो तो सोचा क्या हम अपवित्र वन वर्सा गुमाये कें? मगर यह सव वोलने की युक्ति चाहिये। कोई नशे (जिगर) सें समझावें तो येहसमझे कि यह ठीक कहती हैं। वाप कहते हैं पवित्र वनो तो स्वर्ग का मालिक वनेंगे। तो अव हम पवित्र ना वनें क्या? तो फिर वुलाते क्यूं हो पतित पावन आओं। मगर अभी जिगर सें वात नही करते हैं। नही तो फट सें कहें मुझे पवित्र रहना हैं। नही रहने देते हो तो हम अपना जीवघात क्युं करे। हम जाकर वर्तन साफ करती हूं। ऐसी-2 हैं। जो पति को समझाती भी हैं। ओम

8-11-1966:-रात्रीक्लास:-यह स्थापना हो रही हैं यह तो वच्चे? जानते है। दुनियां में तो साधुसन्त महात्मा भक्ति मार्ग के वहुत ही हैं। यहां तो विकारों के ही लिये मारा मारी हो पडती हैं। इन गुरु लागों को [illegible] नही हैं। [illegible] अन्धशर्धाता समझाना पडे जगत गुरु एक निराकार वाप शिव हैं शिव के सिवाय कोई हो नही सकता हैं। इस समय हैं ही पतित दुनियां। देहधारी मनुष्य किसकी भी सदगती कर नही सकताहैं। शिव वावा तो देहधारी हैं ही नही समझाते हैं यह इनका शरीर हैं वहुत जन्मों के अन्त का। मेरा नाम तो शिव ही हैं। और सव आत्माओं को शरीर मिलता है। नाम भी शरीर पर रखा जाता हैं। मेरा नाम शरीर पर नही आत्मा पर हैं। मैं जव इसमें प्रवेश करता हूं तो भी मेरा नाम शिव ही रहता हैं। मनुष्य कुछ भी नही समझते। पत्थर वुधी हैं। मनुष्य तो आत्मा को भी नही जानतेहैं। आत्म ज्ञान क्या देते हैं। आत्मा सो परमात्मा फिर परमात्मा सो आत्मा यही ज्ञान फैला हुआ हैं। निराकार परमपिता परमात्मा के विना कोई देहधारी ज्ञान दे ही नही सकता। यह तो ढेर गुरु हैं। सव भक्ति मार्ग की अन्धशर्धा में। अभी उनको पकडना चाहिये (अक्लमन्द वच्चा हो तो अखवार में भी डाल सकता हैं। जगत गुरु सर्व का सदगती दाता पतित पावन तो निराकार परमात्मा ही हैं। देहधारी जगत गुरु जगत के सदगति करता हो ही नही सकते।) इशारा देना पडे नही तो अन्धो को लाठी कैसे मिलें। मगर अव तक वच्चोंमें वो नशा कहां? अव तक तो 5आना भी मुशकल समझे हैं। अभी तो ग्यारहा आना वाकी ज्ञान पाना हैं। चलते-2 फिसल जाते हैं। समझाने की शक्ति नही हैं। इस लिये मां वाप वच्चों में प्रवेश करके मदद करते हैं। प्रदर्शनीयों का उदघाटन आद करते हैं। वाप वच्चों का मददगार हैं। साधु सन्तआद आते हैं लाखों रुपया कमाये जाते हैं। फिर भी पवित्र रहते हैं इसलिये मान हैं। यह कोई समझते नही है कि यह जगत गुरु फिर भी यहां जन्मे लेगें। दुनियां में वहुत घोर अन्धेरा है वाप का परिचय नही हैं। उन्होंको गुरु सूमझ कितने आकर माथा झुकाते हैं। भीड लग जाती है चरणों में गिरने लिये। मिलता कुछ भी नही। यह वातें कोई नही जानते हैं। तुम्हारी वहुत मेहनत हैं। घर वार में रहते पवित्र रह दिखाना यह हिमथ कोई नही दिरपलाते। वावा वच्चों को वहुत मदद करते हैं। वेंच को पता नही पडता है। ममां भी कितनी सर्विस कर रही हैं। जैसे वावा वैसे मामा करती हैं। मामां को और ही जास्ती मर्तवा मिला। लेकिन ममां की याद मु कई मुर्दे वन गये। ममां को तो ऊंच पद मिला तो खुश होना चाहिये नां। ओम